इबादतनामा

A Collection of Christian Poems in the Hindustani Language

प्रिंस रॉबिनसन ग़नी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Prince Robinson Gani 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-008-8

First Edition: March 2026

अपना तो लिखना भी इबादत है।
मेरा हर लफ़्ज़ झुका तेरे आगे है।

ख़ुदावंद यीशु मसीह को समर्पित...

प्रस्तावना

ख़ुदावंद यीशु मसीह के जलाली नाम में आपको सलाम। यह पुस्तक आपके हाथों में देते हुए मेरा मन बहुत ख़ुशी और धन्यवाद से भरा है। यह किताब सिर्फ़ लिखे हुए शब्द नहीं है, बल्कि मेरे जीवन के अनुभव, प्रार्थनाएँ और वह आत्मिक सफ़र है, जो मुझे प्रभु के और करीब लाया।

मैंने आज तक जितनी किताबें पढ़ी हैं, उनमें से मुश्किल से शायद एक-दो की ही प्रस्तावना पढ़ी होगी। सच कहूँ तो मुझे प्रस्तावना पढ़ना हमेशा एक उबाऊ काम लगता था। मैं उन लोगों में से हूँ जिन्हें सीधे अध्याय पर पहुँचकर अध्याय में डूब जाने की जल्दी रहती है, ताकि किताब जल्द से जल्द पूरी हो जाए और उसके सफ़र का मज़ा भी जल्दी मिल जाए।

लेकिन आज, जब मैं अपनी ही किताब "इबादतनामा" की प्रस्तावना लिख रहा हूँ, तो मैं चाहता हूँ कि आप इस प्रस्तावना को ज़रूर पढ़ें ताकि इस के पन्नों पर बिखरे हर एक अल्फ़ाज़ की रूह को आप महसूस कर सकें।

क्योंकि यह सिर्फ़ एक औपचारिक शुरुआत नहीं है, यह उन एहसासों, उन दुआओं और उन रूहानी लम्हों की तहरीर (लेख) है, जिन्होंने इस किताब को जन्म दिया। मेरा मानना है कि जब शायरी दुनिया के लिए की जाए, तो वह सिर्फ़ शायरी होती है; लेकिन जब शायरी ख़ुदा के लिए की जाए, तो वो इबादत बन जाती है।

इबादतनामा का यह सफ़र मेरे लिए केवल एक किताब का सफ़र नहीं, बल्कि मेरी रूहानी यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।

इसकी शुरुआत 2014 में हुई, जब मैंने पहली बार मसीही गीत, ग़ज़लें और शायरियाँ लिखनी शुरू की थीं। तब शायद मैं खुद नहीं जानता था कि मेरी ये छोटी-छोटी कोशिशें एक दिन एक किताब की शक्ल ले लेंगी। लेकिन आज पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो महसूस होता है कि जिस योजना का मुझे इल्म (ज्ञान) नहीं था, वह पहले ही से मेरे ख़ुदा के द्वारा मुकर्रर (निश्चित) कर दी गई थी।

शुरुआती दिनों में मेरा लिखना किसी आदत की तरह था। लिखता, गुनगुनाता, सोशल मीडिया पर साझा करता और फिर आगे बढ़ जाता। मगर माता-पिता और लोगों की सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ, उनकी दुआएँ और सबसे बढ़कर, ख़ुदा की प्रेरणा मुझे लगातार लिखने की ताकत देती रहीं।

साल 2025 में मेरे दिल में एक सवाल गूँजा—"जो क़लाम तेरे हाथ में दिया गया है, उसका तू क्या कर रहा है?"

उस पल मुझे समझ आया कि यह हुनर मेरा नहीं—यह ख़ुदा की अमानत है। इसे छुपाकर रखना, इसे दबाकर रखना, शायद उस अमानत के साथ इंसाफ़ ना होता। यही सोच मेरी इस यात्रा का टर्निंग पॉइंट बनी।

इस किताब की खूबसूरती इस बात में है कि इसकी भाषा 'हिंदुस्तानी' है, जिसमें हिंदी और उर्दू की मिठास दोनों शामिल हैं। मैं चाहता था कि हर पाठक, चाहे वह किसी भी भाषा-भूमि से हो, इस किताब को न सिर्फ़ पढ़े, बल्कि महसूस करे; न सिर्फ़ समझे, बल्कि उसके हर लफ़्ज़ से जुड़ पाए।

इस किताब का हर ख़्याल, हर शेर और हर मिसरा यीशु मसीह की शिक्षाओं से प्रेरित है। बाइबिल की सच्चाइयाँ इसमें सिर्फ़ लिखी नहीं गईं, बल्कि महसूस की गई हैं। इसी वजह से इसका नाम "इबादतनामा" रखा गया — क्योंकि यह किताब सिर्फ़ शायरी

का संग्रह नहीं; यह दिल की दुआ, रूह की पुकार, और परमेश्वर की उपासना का बयान है।

इबादतनामा केवल पढ़ने की चीज़ नहीं है; यह महसूस करने की चीज़ है। यह वह सफ़र है जहाँ आप हर पन्ना पलटते हुए खुद को ख़ुदा की मौजूदगी के और करीब महसूस करेंगे। यह किताब उस मोहब्बत की तहरीर (लेख) है, जो मसीह ने मेरे दिल में रखी, और उस क़लाम की गवाही है, जिसे मैंने महसूस किया, लिखा और अब आप तक पहुँचा रहा हूँ।

मेरी प्रार्थना है कि यह किताब आपकी ज़िंदगी में भी वही नूर, वही गर्माहट और वही रूहानी ताज़गी भर दे, जो ख़ुदा ने मुझे इस सफ़र के दौरान बख़्शी। यह किताब आपके दिल को मसीह की ओर और आपकी रूह को उसकी सच्चाई के और नज़दीक लाए — यही मेरी दुआ है। आमीन।

-प्रिंस रॉबिनसन ग़नी

फहरिस्त

इबादतनामा 1
ख़ुदा जो हर जगह है मौजूद 3
हाल-ए-दिल 5
फ़ोन -सी मोहब्बत 6
प्यार मसीहा का 8
मसीह जबसे आया है 10
मेरा तरफ़दार 12
तू याद आए 14
मोहब्बत 15
मसीही नौजवान 16
कौन है येशु? 18
तेरा इख़्तियार 20
ग़ाफ़िल इंसान 22
उसके बिना 24
गुनाह से बात 25
इतवार का बुखार 27
लहू तेरा यीशु 29
हिदायत 30
शान-ए-मसीह 32
यरुशलेम 34

फ़ज़ल-ए-ख़ास 37
नज़्म-ए-ज़िंदगी 39
लालच का अंजाम 41
रूह-ए-पाक 43
ख़ुदा और इबादत 45
सच्चा दोस्त: यीशु मसीह 47
क़लाम-ए-पाक 49
आमद उसकी 51
सदाए-शहादत-ए-मसीह 53
चराग़ हो तुम: ख़ुदा के ख़ादिम 55

इबादतनामा

तेरे पास आने का बहाना बन जाए।
तेरी पसंद का नज़राना बन जाए।

असर दे मेरे लफ़्ज़ों में कुछ ऐसा,
शायरी मेरी इबादतनामा बन जाए।

ख़ुदा तू चलना हमेशा साथ मेरे,
भले दुश्मन मेरा ज़माना बन जाए।

कर मेरी क़लम पर तू करम ऐसा,
हर ग़ज़ल रूहानी तराना[1] बन जाए।

जो दिखे मुझे हर जगह, हर घड़ी,
ख़ुदाया ऐसा तू नज़ारा बन जाए।

गिराए दुनिया पर कायम रहे वो,
यहोवा जिसका सहारा बन जाए।

चख ले जो एक बार मसीहा को,
वो शख़्स उसका दीवाना बन जाए।

उम्मीदों की डूबती हुई कश्ती का,
खुदावंद मज़बूत किनारा बन जाए।

तेरी मोहब्बत काफ़ी है 'ग़नी' को,
परवाह नहीं जहाँ बेगाना बन जाए।

1. आत्मिक गीत

ख़ुदा जो हर जगह है मौजूद

ऐ ख़ुदा जो हर जगह है मौजूद,
क्या है बिन तेरे मेरा वजूद?

जो ख़याल न आया ज़हन में,
तू जानता है उसका मक़सूद।[1]

तेरी बातें घुल गई किरदार में,
महकूँ मैं जैसे शजर[2] हो ऊद।

मिला है सुकून हज़ूरी[3] में तेरी,
मैं दुनिया से हुआ जब मायूस।[4]

आए जितने तूफ़ान मुझ पर,
तेरे साए में रहूँगा मैं महफ़ूज़।[5]

माँगूँ बस मैं अब ये दुआ,
तेरा क़लाम हो मेरा उसूल।[6]

दुनिया के लिए वक़्त न हो,
तेरी इबादत में रहूँ मशगूल।[7]

ग़नी ने जब जाना तुझको,
मिट गया सब ग़ुरूर फ़ुज़ूल।[8]

1. उद्देश्य 2. खुशबूदार लकड़ी का पेड़ 3. उपस्थिति 4. उदास
5. सुरक्षित 6. नियम 7. व्यस्त 8. बेकार

हाल-ए-दिल

हाल-ए-दिल मेरा तेरे आगे है।
बंदा गरीब खड़ा तेरे आगे है।

मैं तो हूँ तेरे फ़ज़ल[1] के आसरे,
मेरे सारे गुनाह तेरे आगे हैं।

ठोकरे ही मिली है लोगों से मुझे,
टूट कर बंदा गिरा तेरे आगे है।

नहीं है फ़िक्र मुझे कुछ कल की,
मेरा हर दिन गुज़रता तेरे आगे है।

अपना तो लिखना भी इबादत है,
मेरा हर लफ़्ज़ झुका तेरे आगे है।

1. अनुग्रह

फ़ोन -सी मोहब्बत

ये दूरिया ख़त्म मसीह तुझसे हो जाए।
मुझे फ़ोन-सी मोहब्बत तुझसे हो जाए।

रह न पाऊँ एक पल भी मैं बगैर तेरे,
हर दिन की शुरुआत तुझसे हो जाए।

तेरी यादों के नोटिफ़िकेशन आते रहें,
दिल मेरा ये अपडेट तुझसे हो जाए।

तेरे बिना लगे बैटरी कमज़ोर सी,
ये मेरी ज़िंदगी चार्ज तुझसे हो जाए।

तेरा नाम हो पासवर्ड ज़िंदगी का,
बंद राहे अनलॉक तुझसे हो जाए।

चाहे नेटवर्क हो या ना हो आस-पास,
रूह की कनेक्टिविटी तुझसे हो जाए।

कोई और नंबर न डायल करूँ मैं,
हर कॉल, हर बात तुझसे हो जाए।

जब भी डिलीट हो उम्मीदों की फ़ाइल,
रीस्टोर सारी उम्मीदें तुझसे हो जाएँ।

प्यार मसीहा का

तीस सिक्कों में सौदा किया मसीहा का।
इंसान तू समझ न पाया प्यार मसीहा का।

वो मेरे हिस्से की सलीब उसने उठा ली।
हाथों में तस्वीर मेरी उसने सजा ली।
टपका था पसीना उसका लहू बन कर,
वो खूँ की बूंदों से इज़हार[1] मसीहा का।
इंसान तू समझ न पाया प्यार मसीहा का।

शिफ़ा[2] मिली है उसके कोड़े खाने से हमें।
मिली नजात[3] उस पर ईमान[4] लाने से हमें।
मेरे सारे गुनाहों को ले लिया सर अपने,
लहू में भीगा काँटों का ताज मसीहा का।
इंसान तू समझ न पाया प्यार मसीहा का।

सह लिया सब कुछ यीशु ने हमारे लिए।
हराया शैतान को सलीब पर हमारे लिए।
सूली से भी वो माफ़ करता रहा सबको,
कितना अज़ीम[5] है किरदार[6] मसीहा का।
इंसान तू समझ न पाया प्यार मसीहा का।

नासरी को मेरे बेइंतेहा[7] सताया गया था।
ख़ालिक[8] का मेरे मज़ाक बनाया गया था।
ना खाया तरस किसी ने उस मासूम पर,
उड़ गया था चेहरे का जमाल[9] मसीहा का।
इंसान तू समझ न पाया प्यार मसीहा का।

कांधे पर सलीब जब लेकर चला था येशु।
वो मेरे गुनाह थे जिनके तले दबा था येशु।
पतरस ने भी इंकार कर दिया था उसका,
भीड़ में कोई ना था तरफ़दार मसीहा का।
इंसान तू समझ न पाया प्यार मसीहा का।

तौबा करली, ना करूँगा गुनाह अब मैं और।
ना चढ़ाऊँगा मसीहा को सलीब पर रोज़।
बहुत दुःख सहा है मेरे मसीह ने मेरे लिए,
मुझ पर है बहुत बड़ा एहसान मसीहा का।
इंसान तू समझ न पाया प्यार मसीहा का।

1. प्रकट करना 2. चंगाई 3. उद्धार 4. विश्वास 5. महान 6. व्यक्तित्व
7. अत्यधिक 8. सृष्टिकर्ता 9. सुंदरता

मसीह जबसे आया है

ज़िंदगी में मसीह जबसे आया है।
रहमतों[1] का बादल सर पे छाया है।

धुल गए है दाग़ गुनाहों के सब,
मैंने हुज़ूर[2] आराम उसके पाया है।

लौटा नहीं खाली हाथ कभी वो,
माँगने जो दरबार उसके आया है।

गले से लगाओ दुश्मनों को अब,
क़लाम में हमें उसने सिखाया है।

अब रौशनी से रौशन है दिल मेरा,
अंधेरों से मुझे उसने बचाया है।

बिखरे थे जो टुकड़ों में कभी हम,
प्यार ने हमें उसके सजाया है।

'ग़नी' की साँसों में एहसास है उसका,
ज़िंदगी को नया उसने बनाया है।

1. कृपा 2. उपस्थिति

मेरा तरफ़दार

ज़िंदगी का हर सफ़र आसान हो जाए।
ख़ुदावंद तू जिसका निगहबान[1] हो जाए।

तेरे रहम पर टिकी है ये ज़िंदगी,
नहीं तो कब का किस्सा तमाम[2] हो जाए।

चाहत नहीं मुझे मशहूर होने की,
मेरा बस तेरे दीवानों में नाम हो जाए।

माफ़ करने का इख़्तियार है तुझे,
झुके जो दर पर तेरे वो बेदाग़ हो जाए।

सुन ले मेरे टूटे दिल की दुआ तू,
आज तुझ पर पुख़्ता मेरा ईमान हो जाए।

हौसला दे अपनी राह पर चलने का,
पूरा मेरी ज़िंदगी से तेरा क़लाम हो जाए।

दुनिया लगाए लाख इलज़ाम मुझ पर,
क्या डर जो तू मेरा तरफ़दार हो जाए।

---

1. रक्षक 2. पूरा

तू याद आए

ठोकर लगे तो तू याद आए।
तेरे सिवा कोई ना रास[1] आए।

मैं घिरू जब भी मुसीबतों में,
तेरे सिवा कोई ना काम आए।

रो देता हूँ मैं क़लाम पढ़ते में,
सूली का तेरी जब बाब[2] आए।

पूछे जब कोई वफ़ा क्या है?
मेरे लबों पर तेरा नाम आए।

नाम तेरा टूटे दिल की दवा है,
लेने से रूह को आराम आए।

पास मेरे रूह के हथियार है,
अब दुश्मन भले हज़ार आएँ।

---

1. पसंद 2. अध्याय

मोहब्बत

बरकतों को बेशुमार उसने पाया है।
हाथों को दुआओं में जिसने उठाया है।

झुका नहीं दुनिया के आगे कभी उसका सर,
ख़ुदा के आगे जिसने सर झुकाया है।

मिली है शिफ़ा फ़ौरन दुखों से उसे,
ज़ख़्मों को अपने जिसने उसे दिखाया है।

मेरी बिखरी और उदास ज़िंदगी को,
उसके क़लाम-ए-पाक ने सजाया है।

कैसे नफ़रत करूंगा मैं किसी से,
मोहब्बत करना मुझे मेरे ख़ुदा ने सिखाया है।

मसीही नौजवान

मसीही नौजवान हो तुम।
कौम के गुमान[1] हो तुम।

भटक जाओ गर तुम कभी।
डर जाओ गर तुम कभी।
राह-ए -सलीब याद करो,
थक जाओ गर तुम कभी।
खून सींचे बागान हो तुम।
मसीही नौजवान हो तुम।

बहकाए जो शैतान तुम्हें।
सताए जो हालात[2] तुम्हें।
याद करो तुम उसको,
देता है जो नजात तुम्हें।
गुनाहों से आज़ाद हो तुम।
मसीही नौजवान हो तुम।

पढ़ो क़लाम रोज़ तुम।
सुबह भी और शाम तुम।
आमद[3] है करीब उसकी,
रट लो ये क़लाम तुम।

जहाँ में एक मिसाल हो तुम।
मसीही नौजवान हो तुम।

दुनिया बदलनी है तुम्हें।
इंजील सुनानी है तुम्हें।
उठो चलो नींद से जगो,
कई रूहे बचानी है तुम्हें।
प्यार का पैग़ाम हो तुम।
मसीही नौजवान हो तुम।

1.गर्व 2. परिस्थितियाँ 3. आगमन

कौन है येशु?

शेर यहूदा का है येशु।
वादा ख़ुदा का है येशु।

प्यासों की प्यास बुझाए,
दरिया हयात[1] का है येशु।

क़ुर्बान हुआ बर्रा बे ऐब,[2]
रास्ता नजात[3] का है येशु।

भटकों को राह दिखाए,
नूर जहान का है येशु।

नबियों से आला[4] मक़ाम,
फरज़ंद[5] ख़ुदा का है येशु।

बदकारों[6] की पुख़्ता आस,
कफ़्फ़ारा[7] गुनाहों का है येशु।

बरसे मुसलसल[8] मुझ पर,
अबर[9] खुशियों का है येशु।

क़ायम[10] है तख़्त उसका,
क़लाम इब्तिदा[11] का है येशु।

इब्लीस के तीर से बचाए,
किला ईमान[12] का है येशु।

ख़ुशबू फैलाए आलम[13] में,
गुल[14] मोहब्बत का है येशु।

वो तोड़ता सारे बंधन है,
तूफ़ान रिहाई का है येशु।

कैसे बयां लफ़्ज़ उसे करे?
ख़ालिक[15] जहान का है येशु।

---

1. जीवन 2.निर्दोष मेम्ना 3.उद्धार 4.ऊँचा 5. बेटा 6. पापियों 7.प्रायश्चित
8. लगातार 9. बादल 10. अटल 11. आरंभ 12. विश्वास 13.संसार
14. फूल 15. सृष्टिकर्ता

तेरा इख़्तियार

हर साँस पर तेरा इख़्तियार[1] है।
मौजज़े[2] किए तूने बेशुमार हैं।

क्या बिगाड़ेगी वबा[3] उसका,
ज़िंदा ख़ुदा जिसके साथ है।

नहीं है तू तन्हा इस सफ़र में,
तेरे कदमों के संग उसके भी निशान हैं।

उसके आने से हो जाएगा सब नया,
जिसने बनाया ज़मीन और आसमान है।

उसके छूने से उठ जाते है मुर्दे भी,
वो ही पिलाता सबको आब-ए-हयात[4] है।

उसके कोड़े खाने से मिली है शिफ़ा,
उसके लहू से मिली हमें नजात[5] है।

उम्र सजदों में कटे तो भी थोड़ा है "ग़नी"
फज़ल[6] से उसके बनी तेरी हर बात है।

1. अधिकार 2. चमत्कार 3.महामारी 4.जीवन का जल
5. उद्धार 6. अनुग्रह

ग़ाफ़िल इंसान

तेरे दिए वक़्त में, वक़्त नहीं तेरे लिए,
ग़ाफ़िल[1] इंसान को फ़ुर्सत नहीं तेरे लिए।

सर छुपाने की जगह न मिली तुझको,
तेरी इस दुनिया में छत नहीं तेरे लिए।

तू ने तो तरस खाया सब पर ऐ ख़ुदा,
झूठों की भीड़ में रहम नहीं तेरे लिए।

हर गुनाह माफ़ किया अपने लहू से तूने,
आज इस दिल में जगह नहीं तेरे लिए।

तेरी नज़र से ही है ये जहाँ गुलज़ार,[2]
मगर इन आँखों में नमी नहीं तेरे लिए।

तेरे नाम का सहारा है सबको यहाँ,
मगर ज़ुबाँ पर शुक्र नहीं तेरे लिए।

तेरी रहमत से ही ये साँसें चलती हैं,
पर धड़कनें धड़कती नहीं तेरे लिए।

'ग़नी' को तो याद करेगी दुनिया सारी,
मरता तो वो है जो जीता नहीं तेरे लिए।

1. लापरवाह 2. फूलों का आँगन/ खुशियों भरा स्थान

उसके बिना

वजूद मेरा क्या है उसके बिना?
ये आसमाँ ये ज़मीं क्या है उसके बिना?

काफ़िर[1] दिल को मोहब्बत हुई ख़ुदा से,
ज़िंदगी का गुज़ारा नहीं है उसके बिना।

पाकर 'मसीह' को महसूस ये हुआ,
हम तन्हा जिए जा रहे हैं उसके बिना।

छाले ही मिलेंगे मशक़्क़तों[2] के बदले,
कामयाबी मिलती नहीं है उसके बिना।

ख़ुदा ने बख़्शी है इज़्ज़त कभी गुरूर न करना,
जहाँ में आबरू[3] तेरी क्या है उसके बिना?

लोग दिखावा समझते है मेरी इबादत को,
हक़ीक़त ये के दिल लगता नहीं है उसके बिना।

---

1. अविश्वासी 2. कोशिशों 3. इज़्ज़त

गुनाह से बात

ऐ गुनाह तू कितना हसीन है।
अंजाम तेरा कितना ग़मगीन है।

तह में तेरी है बस अंधेरा ही,
बाहर से दिखता कितना रंगीन है।

जो जाता है आगोश में तेरी,
वो शख़्स कितना बदज़हीन[1] है।

तुझ में सच नहीं, तू फरेब[2] है,
ज़ायके[3] में तू कितना लज़ीज़[4] है।

तू तो बहुत बड़ा संग[5] दिल है,
पर ख़ुदा भी कितना करीम है।

छोड़ नहीं सकता कोई तुझे,
झूठा ये तेरा कितना यक़ीन है।

हारा तू मसीह से सलीब पर,
किया तुझे कितना ज़लील[6] है।

'ग़नी' अब लौट ख़ुदा के पास,
देख तो वो कितना रहीम[7] है।

1. असभ्य/ बेवकूफ़ 2. छल 3. स्वाद 4. स्वादिष्ट 5.पत्थर 6. शर्मिंदा
7. दयालु

इतवार का बुखार

हमको तो चढ़ता इतवार को बुखार है।
आती उसी दिन बस ख़ुदा की याद है।

छह दिन गुज़रे इब्लीस के संग अच्छे,
आज ख़ुदा से हमारी मुलाक़ात है।

आज तो ज़रा फरिश्ता बनने दो हमें,
चर्च जाएँगे हम कि आज इतवार है।

पहन लें रास्तबाज़ी का लिबास आज,
कल से तो फ़िर हम वही गुनहगार है।

खामियाँ देख कर न छोड़ी दुनियादारी,
एक कमी देख चर्च छोड़ने को तैयार हैं।

चर्च जाओ, गुनाह हो जितना संगीन,[1]
यीशु मसीह ही गुनहगारों की नजात है।

हो गए शर्मिंदा सब मंत्री ये देख कर,
चर्च में हमसे बड़े-बड़े सियासतदान[2] हैं।

क्या करेंगे मज़हब के बारे में जानकर,
कोर्स में नहीं कोई बाइबिल की किताब है।

ये डिग्रीयाँ दीवार पर ही रह जाएँगी,
बिन मसीह के हुआ कौन सरफ़राज़[3] है?

लिखा है कड़वा, पर है तो हक़ीक़त,
क्यों चुभते सबको 'ग़नी' के अल्फ़ाज़ हैं?

1. गंभीर 2.राजनीतिज्ञ 3.सम्मानित

लहू तेरा यीशु

बहता रहा लहू तेरा यीशु सूली पर से मेरे लिए।
सलीब का दुख और कोड़ों की मार सहता रहा मेरे लिए।

मेरी नजात वो बन आया पापी था जब मैं
मुझको धोया खून से अपने पाक हुआ तब मैं

खोया था मैं दुनियाँ में, उसने मुझको ढूँढा है।
रस्ता कठिन और भारी सलीब चलता रहा मेरे लिए।

बहता रहा लहू तेरा यीशु सूली पर से मेरे लिए।
सलीब का दुख और कोड़ों की मार सहता रहा मेरे लिए।

मेरे पापों का बोझ उसने सब उठा लिया।
प्यार उसका कैसा अनोखा मुझको बचा लिया।

बाप से उसने मुझको मिलाया, हर लानत से उसने बचाया
प्यास और दर्द से मेरा मसीह तड़पता रहा मेरे लिए।

बहता रहा लहू तेरा यीशु सूली पर से मेरे लिए।
सलीब का दुख और कोड़ों की मार सहता रहा मेरे लिए।

हिदायत

न करो तुम, ख़ुदा के वास्ते न करो तुम।
जैसा है क़लाम, बस वैसा पेश करो तुम।

दुनिया को खुश करने के लिए नहीं,
जो लिखा है क़लाम में वो बात करो तुम।

हर शख़्स तो आलिम बन बैठा है यहाँ,
किस्सों से रूहों को न बर्बाद करो तुम।

ना झूठ की मिलावट करो तुम इसमें,
आने वाली नस्लों को न ख़राब करो तुम।

लक़ब[1] खुद को देने से पहले बड़े- बड़े,
राह में उसकी खुद को कुर्बान करो तुम।

अपनी मर्ज़ी ज़ाहिर करो न ख़ुदा पर,
उसकी रज़ा में ख़ुशी तलाश करो तुम।

दौलत-शोहरत की हवस से तो बेहतर,
बस नाम मसीह का आबाद[2] करो तुम।

मसीह ने सिखाई मोहब्बत सच्ची,
उसी के नाम पर ना फ़साद[3] करो तुम।

1. उपनाम/ ख़िताब 2. समृद्ध 3. झगडे

शान-ए-मसीह

सब बादशाह हाथ फैलाये खड़े हैं।
तख़्त ओ ताज पैरों में उसके पड़े हैं।

रहनुमा बना दे मुझे मूसा जैसा,
बहुत लोग अब भी मिस्र में बसे हैं।

कैसे दिल दुखा देंगे किसी का?
हम जो मसीह तालीम[1] में पले हैं।

वो काँटों के ताज की बादशाही,
सल्तनत उसकी दुनिया से परे है।

बुझा पाएगा कौन उसे भला?
चराग़ जो उसकी अमान[2] में जले है।

कुर्बान कर के सूली पर ज़िंदगी,
रंग उसने हमारी ज़िंदगी में भरे हैं।

ना डरेगा वो मौत की वादी में,
जो शख़्स मसीह के नूर में चले है।

मेरी पोशाक से ना आंक़ो मुझे,
हम लिबास-ए-नजात से सजे हैं।

तुम्हें क़लाम पढ़ने का वक़्त नहीं,
दुःख जिसके लिए लोगों ने सहे हैं।

याद किया जब मंज़र सूली का,
कितने अश्क़ मेरी आँखों से बहे हैं।

फल लाते हैं वो शजर[3] बहुत-सा,
जो दरख़्त मुसलसल[4] उसमें बने हैं।

तन्हा नहीं छोड़ा कभी तूने मुझे,
पाक रूह तेरा सदा मुझ में बसे है।

1. शिक्षा 2. संरक्षण 3.पेड़ 4. लगातार

यरुशलेम

ऐ यरुशलेम तू ख़ूबसूरत बड़ा है।
तेरी सर-ज़मीं पर मसीह चला है।

है तुझ पर फज़ल ख़ुदा का बहुत,
उजड़ कर भी तू आबाद खड़ा है।

दावा है तुझ पर कितने लोगों का,
अमन का ख़ज़ाना तुझमें रखा है।

जिस ख़्वाब को देखा दाऊद ने,
सुलैमान ने हक़ीक़त में रचा है।

हैकल ख़ुदावंद की यरुशलेम में,
सबके लिए घर दुआ का बना है।

मत घूम दुखी, तन्हा दर-बदर तू,
ख़ुदा का घर सबके लिए खुला है।

था अहद-ए-संदूक[1] शान यहाँ की,
उसकी रूह की अलामत[2] बना है।

मुझे बनाया तूने अपना फरज़ंद,[3]
ख़ुदा का रूह अब मुझ में बसा है।

तेरी गलियों में सलीब का सफ़र,
नजात का रास्ता यही से बना है।

तेरे आँगन में उतरा पाक रूह,
गैर ज़ुबा में गूँजी रब की सना है।

जो चलेगा हुक्मों पर ख़ुदा के,
उनके लिए नया यरुशलेम रखा है।

सोने की सड़के, मोती के द्वार,
कमाल आसमानी शहर सजा है।

ना चाँद, ना सूरज होगा वहाँ,
अब्दी[4] नूर मसीह का वहाँ सदा है।

किया है वादा हमसे मसीह ने,
ले जाएगा हमको खुद वो जहाँ है।

पोछेंगे आँसू मसीहा हाथों से,
जो भी शख़्स जहाँ में ग़मज़दा है।

रहे अमन तुझमें ऐ यरुशलेम,
'ग़नी' की दुआ शाम-ओ-सुबह है।

1. वाचा का संदूक 2. प्रतीक 3. बेटा 4. अनंत

फ़ज़ल-ए-ख़ास

साँसे चलती मेरी फ़ज़ल से तेरे।
राहें रोशन हैं मेरी वचन से तेरे।

ये मेरी शख़्सियत[1] यूँ ही नहीं,
मनसूबे[2] में था मैं अज़ल से तेरे।

बज़्म-ए-दुनिया[3] रास ना आए,
महफ़िलें सजे मेरी ज़िक्र से तेरे।

ना होऊंगा मैं शर्मिंदा कभी,
तअल्लुक हुआ मेरा नसब[4] से तेरे।

ना करेगा गुनाह वो शख़्स फिर,
जो सच में डरेगा ग़ज़ब[5] से तेरे।

जाए कहाँ तेरा दर छोड़कर?,
मिली नजात हमें सबब से तेरे।

मैं तो काबिल नहीं हूँ किसी,
इज़्ज़त बनी हुई है रहम से तेरे।

मेरी आँखें भी करें शुक्राना तेरा,
भीगे जब ये सलीबी ग़म से तेरे।

ज़िंदगी नहीं है ये मुश्किल मेरी,
जाना है सलीबी सफ़र से तेरे।

मिलती है अब्दी ज़िंदगी[6] उसे,
जो खाए हयात[7] के शजर[8] से तेरे।

मेरी ग़ज़लों में आए खुशबू तेरी,
इत्र-सी महके ये असर से तेरे।

'ग़नी' तो सच में कुछ भी नहीं,
सब है हासिल उसे करम से तेरे।

---

1. व्यक्तित्त्व 2. योजना 3. संसार का मेला 4. वंश 5. क्रोध
6. अनंत जीवन 7. जीवन 8. पेड़

नज़्म-ए-ज़िंदगी

दुनिया के आगे इज़्ज़त बनी हुई है।
आस जब से मसीह पर रखी हुई है।

सवार दे अपनी कलम से ऐ ख़ुदा,
नज़्म-ए-ज़िंदगी अधूरी पड़ी हुई है।

दुल्हा आने वाला है, रहो तैयार,
जाएगी वही दुल्हन जो सजी हुई है।

अता कर मुझको कुछ तो ऐ ख़ुदा,
कब से ये क़लम बस यूँ रखी हुई है।

दुश्मनों को दोस्त कर दिया उसने,
अब दुआ सलाम सब से बनी हुई है।

हरगिज़ नहीं भाते उसको वो लोग,
आँखें जिनकी घमंड से चढ़ी हुई हैं।

हम ढूँढ कर लाएँगे उन भेड़ों को,
गुनाहों के गड्ढों में जो फँसी हुई हैं।

जिसने भी बनाया उसे हमसफ़र,
कश्तियाँ उनकी किनारे लगी हुई हैं।

सताओ हमें मसीहत के नाम पर,
साँसे हम में अभी बहुत बची हुई हैं।

राह-ए-मसीह पर चलेंगे बेख़ौफ़,
उसकी दिलेरी हम में बसी हुई है।

लालच का अंजाम

गुनाहों को बोकर क्या मिला?
दूर ख़ुदा से होकर क्या मिला?

ये जहाँ तो मिल गया है तुझे,
रूह अपनी खोकर क्या मिला?

तीस सिक्कों की खनक में तुझे,
मसीह को तोलकर क्या मिला?

सब कुछ था आहाब[1] तेरे पास,
एक बाग़ पाकर क्या मिला?

खुशियाँ बाँटने के बजाए तुझे,
नाबोत को सताकर क्या मिला?

हनन्याह, सफ़ीरा सब तुम्हारा था,
चंद पैसा छुपाकर क्या मिला?

ख़ुदा बनने की चाह में, लूसीफ़र!
रुतबा अपना खोकर क्या मिला?

बरकतें थीं ख़ुदा की संग हमारे,
लालच में हमें आकर क्या मिला?

1. 1 राजा 21:1, 2. प्रेरितों के काम 5:1-11

रूह-ए-पाक

रूह-ए-पाक मेरे साथ है।
ख़ुदा का इनाम-ए-ख़ास है।

वीरान पड़ी ज़िंदगियों को,
पाक रूह करता आबाद है।

आँखों से पोछता ये आँसू,
टूटे दिलों की वो आस है।

ढ़ह जाए शैतानी मंसूबा,[1]
पाक रूह ऐसा तूफ़ान है।

बहता शिफ़ा का दरिया है,
हर बीमारी होती तमाम[2] है।

वजूद इसका नया नहीं,
ये तो इब्तिदा-ए-क़लाम है।

एहतिराम[3] करो हज़ूरी[4] का,
बड़ा पाक इसका मक़ाम[5] है।

तोड़े थे बंधन शिमशोन के,
किया फिर उसको बहाल[6] है।

उतरेगा रूह हर बशर पर,
कहता ये ख़ुदा का क़लाम है।

कमज़ोरों को देता है बल,
ईमान वालों की ये चट्टान है।

पाक रखेंगे हम जिस्म को,
ये रूह का पाक मकान है।

1.योजना 2. ख़त्म 3.आदर 4. उपस्थिति 5. स्थान 6. पुनः स्थापित करना

ख़ुदा और इबादत

वो तेरी चाहत से मिलेगा।
ख़ुदा बस इबादत से मिलेगा।

तमन्ना रख तू ज़क्कई जैसी,
वो घर आकर तुझ से मिलेगा।

मख़लूक़[1] में ना तलाश उसको,
तुझे वो तेरे दिल में मिलेगा।

मौत तक रहे वफ़ादार अगर तू,
ज़िंदगी का ताज तुझे मिलेगा।

नफ़रत ही मिलेगी तलवारों से,
तख़्त तुझे ख़िदमत[2] से मिलेगा।

हो जाए उसका करम अगर,
मीठा पानी समुद्र से मिलेगा।

दुनिया की रोनकों से बहुत दूर,
सकून उसकी हज़ूरी में मिलेगा।

1. सृष्टि 2. सेवा

सच्चा दोस्तः यीशु मसीह

दोस्त कहा उसने मुझे, दोस्ती वो निभाता है।
देख मुश्किल में मुझे वो दौड़ा चला आता है।

जान भी दी उसने मुझ गुनहगार के लिए,
कितना खुदावंद मुझ बदकार[1] को चाहता है।

बैठूँ जब भी मैं तन्हाई में, हज़ूरी में उसकी,
क़लाम से अपनी गहरी बातें वो बताता है।

मुझको तो सलीका नहीं जहाँ में जीने का,
दुनिया की भीड़ में वो चलना सिखाता है।

वादा है उसका, पूँछ नहीं सर बनाऊँगा तुझे,
दुश्मनों के आगे ऊँची जगह में बिठाता है।

चूक जाता हूँ अक्सर मैं उसके हुक्मों से,
वो वादें अपने मुसलसल[2] मुझसे निभाता है।

कब तक अनसुना करेगा उसकी आवाज़,
रोज़ तुझको मोहब्बत से यीशु बुलाता है।

1.पापी 2. लगातार

क़लाम-ए-पाक

बदली है ज़िंदगियाँ इसने, बदले अमाल[1] हैं।
पढ़े जो दिल से इसे, होता वो सरफ़राज़[2] है।

मिट जाएगी एक रोज़ दुनिया की हर शह,[3]
कायम है जो सदा वो मुजस्सम-ए-क़लाम[4] है।

लाएगा ईमान जो उस पर इस जहाँ में,
वो ही शख़्स अब्दी ज़िंदगी का हक़दार है।

खोलेगा अपने राज़ की परते ख़ुदा उस पर,
उसके क़लाम से सुनने को जो बेकरार[5] है।

रहते है दुनिया की रौनकों में मसरूफ़[6] पर,
बिना नूर-ए-क़लाम के तो जीना बेकार है।

फर्ज़ करो इसके बिना तुम ज़िंदगी अपनी,
ग़म की तराई जहाँ सिर्फ़ चीख- पुकार है।

क़लाम-ए- ख़ुदा फ़ज़ल है हम पर उसका,
उसकी बे-लौस[7] मोहब्बत का ये इज़हार है।

यूँ ही नहीं आ गया है ये हाथों में हमारे,
इसके लिए कितने ही लोग हुए कुर्बान हैं।

ये पाक क़लाम है खुद खुदावंद का मेरे,
क़लाम के ज़रिये सदा वो मेरे दरमियान है।

1. काम 2. सम्मानित 3. शक्ति 4. यीशु मसीह 5. बेचैन 6. व्यस्त
7. बिना स्वार्थ के

आमद उसकी

रहो तैयार तुम कि करीब आमद[1] है उसकी।
लेकर जाएगा साथ हमें ये चाहत है उसकी।

वादा क़याम है उसका हर शह[2] मिट जाएगी,
जो कभी ना टलेगी वो बस बात है उसकी।

जियूँगा उम्र भर मैं सिर्फ़ मसीह के लिए,
ये ज़िंदगी मुझको दी गई सौगात है उसकी।

तारों को नूर दिया सूरज को दी है चमक,
वो एल एल्योन[3] है, आला ज़ात है उसकी।

करेंगे सजदा, उतारेंगे जूतियाँ गुनाहों की,
एहतिराम[4] करेंगे हम, हज़ूरी पाक है उसकी।

तेरा तो तू भी नहीं है इस जहाँ में ऐ इंसा,
मालिक-ए-जहाँ है वो, कायनात है उसकी।

बात उसकी सुनते है मुर्दे और तूफ़ान भी,
सब बादशाहों से भी ऊँची शान है उसकी।

मेरे मिसरे[5] छुएँगे हर एक दिल को बेशक़,
मेरे मुँह में मेरी नहीं, अब ज़बान है उसकी।

1. आगमन 2. सांसारिक शक्ति 3. सर्वोच्च ईश्वर 4. आदर
5. शेर की पंक्तियाँ

सदाए-शहादत-ए-मसीह

हमेशा ख़ामोश किया गया हमें।
बस मशवरा ही दिया गया हमें।

हमने चाहा कि कुछ कह सकें,
हर बार ही रोक दिया गया हमें।

हम भी तुम्हारे मुआशरे[1] के थे,
फिर क्यों यूँ सताया गया हमें?

हमने तो गिरतों को थामा था,
न जाने क्यों गिराया गया हमें?

हम सदा हक़ ही तो बोले थे,
लेकिन झूठा बताया गया हमें।

हमने पोछे थे आँसू दुःखियों के,
इरादतन क्यों रुलाया गया हमें?

गाली के बदले दुआ दी हमने,
सिर्फ़ प्यार सिखाया गया हमें।

और सरगर्मी से बढ़ते गए हम,
जितना भी मिटाया गया हमें।

निखरते गए हम तो और भी,
जितना आज़माया गया हमें।

1. समाज

चराग़ हो तुमः ख़ुदा के ख़ादिम

जो राह दिखाए वो चराग़ हो तुम।
रूह को सुकून दे वो राग हो तुम।

क़लाम हमको ख़ुदा का सिखाए।
सलीका हमको दुआ का बताए।
ले चले मसीह की हज़ूरी में हमें,
रवैया सदा मोहब्बत का सिखाए।

रूह से जले जो वो मशाल हो तुम।
जो राह दिखाए वो चराग़ हो तुम।

भटकों को मंज़िल तक पहुँचाए।
डूबती कश्ती को किनारे लगाए।
चढ़ने लगे जब आँखें गुरूर से,
क़लाम से हमको आईना दिखाए।

दर्द में मिले जो वो आराम हो तुम।
जो राह दिखाए वो चराग़ हो तुम।

रहनुमाई वो मूसा जैसी करते है।
कभी प्यार कभी सख़्ती करते है।

सब माँगे दुआएँ बस अपने लिए,
वो सबके लिए अर्ज़ी करते है।

ख़ुदा ने जो दिया वो इनाम हो तुम।
जो राह दिखाए वो चराग़ हो तुम।

ख़ुशी और ग़म में साथ होते है।
होने से इनके दिलशाद[1] होते है।
करें जब ईमान से दुआ ख़ुदा से,
वीरान शहर फिर आबाद होते है।

सूरज सी चमके वो मिसाल हो तुम।
जो राह दिखाए वो चराग़ हो तुम।

हर एक सताव को ये सहते है।
तूफानों में डट्ट के खड़े रहते है।
लटकी हो मौत की तलवार भले,
ये अपने ईमान पर अड़े रहते है।

महक जो फैलाए वो बाग़ान हो तुम।
जो राह दिखाए वो चराग़ हो तुम।

बातें इनकी मरहम बन जाएँ,
दुआ इनकी बरक़त बन जाएँ।

सुनाएँ क़लाम-ए-ख़ुदा जब ये,
दुःखी दिलों को राहत मिल जाए।

हम्द[2] ख़ुदा की करे वो साज़ हो तुम।
जो राह दिखाए वो चराग़ हो तुम।
रूह को सुकून दे वो राग हो तुम।

1. दिल खुश 2. प्रशंसा